11/2/2020

गद्यांश

(3) बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन मरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त जेब भरी हो तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है।

प्रश्न (क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखें।

उत्तर - पाठ का नाम - बाज़ार दर्शन
लेखक - जैनेंद्र कुमार

प्रश्न (ख) बाजार का जादू 'आँख की राह' किस प्रकार काम करता है?

उत्तर - बाजार का जादू धोखा 'आँख की राह' से इस तरह काम करता है कि बाज़ार में सजी सुन्दर वस्तुओं को हम आँखों से देखते है और उनकी सुन्दरता पर आकृष्ट होकर आवश्यकता न होने पर भी उन्हें खरीदने के लिए लालायित हो उठते हैं।

प्रश्न(ग) क्या आप भी 'बाजार के जादू' में फँसे हैं? अपना अनुभव लिखिए जब आप न चाहते पर भी सामान खरीद लेते हैं?

उत्तर- हाँ, मैं भी बाज़ार के जादू में फँसा हूँ। एक बार एक बड़े मॉल में प्रदर्शित मोबाइल फोनों को देखकर मन उनकी ओर आकर्षित हो गया। यद्यपि मेरे पास ठीक-ठीक फोन था, फिर भी मैंने २०,००० रुपये का फोन किश्तों पर खरीद लिया।

प्रश्न(घ) क्या आप इस बात से सहमत हैं कि कमजोर इच्छा-शक्ति वाले लोग बाजार के जादू से मुक्त नहीं कर सकते तर्क सहित लिखिए।

उत्तर- जिन लोगों की इच्छा-शक्ति कमज़ोर होती है, वे बाज़ार के जादू से मुक्त नहीं हो सकते। ऐसे लोग अपने मन पर नियंत्रण न रख पाने और कमज़ोर इच्छा-शक्ति के कारण बाज़ार के जादू का सरलता से शिकार बन जाते हैं।

(५) हम में पूर्णता होती तो परमात्मा से अभिन्न हम महाशून्य ही न होते? अपूर्ण हैं, इसी से हम हैं। सच्चा ज्ञान सदा इसी अपूर्णता के बोध को हम में गहरा करता है। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है। अतः आप कोई वही हो सकता है जो बनात

मन को रोकने को न कहे, जो मन को भी इसलिए सुने क्योंकि वह अप्रयोजनीय रूप में हमें नहीं प्राप्त हुआ है। हाँ मनमानेपन की छूट मन को न हो, क्योंकि वह आखिल का अंग है, खुद कुल नहीं है।

प्रश्न (क) सच्चे ज्ञान का स्वरूप बताइए।

उत्तर- सच्चा ज्ञान वह है जो मनुष्य में अपूर्णता का बोध गहरा करता है। वह उसे पूर्ण होने की प्रेरणा देता है।

प्रश्न (ख) मनमानेपन की छूट मन को क्यों नहीं होनी चाहिए?

उत्तर- मनमानेपन की छूट मन को नहीं होनी चाहिए क्योंकि वह आखिल का अंग है। वह स्वयं पूर्ण नहीं है, अपूर्ण है।

प्रश्न (ग) लेखक किस उपाय के बारे में बताता है?

उत्तर- लेखक उपाय के बारे में कहता है कि कोई वही हो सकता है जो बताए मन को रोकने को न न कहे तथा मन की भी सुने क्योंकि वह अप्रयोजनीय रूप में अभी प्राप्त नहीं हुआ है।